पाठ 8. बेटे की वापसी

पाठ का परिचय

यह बाइबल की एक कथा है। एक किसान के दो बेटे थे। बड़ा बेटा परिश्रमी एवं आज्ञाकारी था जबकि छोटा बेटा अधीर स्वभाव का था। उसे खेत पर काम करना अच्छा नहीं लगता था। वह सदैव यात्रा करने और संसार का भ्रमण करने के सपने देखता रहता था। इसलिए एक दिन उसने अपने पिता से अपना हिस्सा माँगा तथा कहीं और जाकर काम की तलाश करने की इच्छा व्यक्त की। पिता को उसकी बात सुनकर दुख हुआ परंतु उन्होंने उसकी बात मान ली। बेटे के हाथ में अपने हिस्से के पैसे आए तो वह यात्रा पर निकल पड़ा। वह शाही ठाट-बाट से अपना जीवन बिताने लगा। उसने खूब दोस्त बनाए, उनको दावतें दीं और उन पर खूब पैसा खर्च किया। धीरे-धीरे उसका सारा धन इसी प्रकार फिजूलखर्ची में नष्ट हो गया। पैसों के समाप्त होते ही उसके सब मित्रों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। अब वह कंगाल हो गया था। उसने कुछ काम करके पैसा कमाने की सोची परंतु उसे कोई काम करना नहीं आता था। इसलिए कोई नौकरी न मिल सकी। बड़ी मुश्किल से उसे सुअरों की रखवाली करने का काम मिला। दिन भर काम करने के बाद भी उसे पेटभर खाना तक न मिलता था। अब वह अपना घर छोड़ने की अपनी मूर्खता पर पछताने लगा। आखिर उसने घर वापिस जाकर पिता से माफ़ी माँगने का निश्चय किया। घर पहुँचने की बड़ी कष्टदायी लंबी यात्रा के बाद जब वह घर पहुँचा तो उसके पिता ने उसकी सब गलतियों को माफ़ कर उसे गले से लगा लिया। बड़े बेटे ने इस पर आपत्ति व्यक्त की तो उन्होंने उसे समझाते हुए कहा कि पश्चाताप करने और लौट आने पर हमें उसे क्षमा कर उसका स्वागत करना चाहिए।

इस कहानी के माध्यम से ईसा यही बताना चाहते थे कि ईश्वर उन पापियों को भी पिता की भाँति प्रेम करता है जो अपनी गलती मानकर उसका प्रायश्चित कर लेते हैं।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पहले स्वयं पाठ का आदर्श वाचन करें। उसके बाद बच्चों से वाचन करवाएँ। उन्हें कठिन शब्दों के अर्थ बताते जाएँ। उनकी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए उन्हें प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें तथा उनके प्रश्नों के उत्तर दें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्न पूछते हुए कक्षा में चर्चा करें।

- बच्चों से गलती होने पर माता-पिता कैसा व्यवहार करते हैं?
- अपनी गलती मानकर उसमें सुधार करने से क्या होता है?
- माफ़ करना सीखना क्यों ज़रूरी है?
- गलतियों की हमारे जीवन में क्या भूमिका होती है?